



National Journal of Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177

NJHSR 2026; 1(68): 76-78

© 2026 NJHSR

www.sanskritarticle.com

गजानंद सेन

निःशब्द कॉलेज एकट बोधग्राम,
बंशी का बैग, गंगापुर मोड,
करौली राजस्थान

पुष्पेंद्र सिंह

समन्वयक, निःशब्द कॉलेज एकट
बोधग्राम, बंशी का बैग, गंगापुर मोड,
करौली राजस्थान

Correspondence:

गजानंद सेन

निःशब्द कॉलेज एकट बोधग्राम,
बंशी का बैग, गंगापुर मोड,
करौली राजस्थान

चरक संहिता एवं सुश्रुत संहिता में चिकित्सा विज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन

गजानंद सेन , पुष्पेंद्र सिंह

सारांश- भारतीय आयुर्वेद विश्व की प्राचीनतम एवं वैज्ञानिक चिकित्सा पद्धतियों एवं प्रणालियों में अग्रणीय स्थान रखता है। आयुर्वेद के दो प्रमुख आधार ग्रंथ हैं 1, चरक संहिता 2 सुश्रुत संहिता

चरक संहिता में कायचिकित्सा जैसे - रोग -निदान, औषधि विज्ञान आहार -विहार और स्वास्थ्य संरक्षण का विस्तृत विवेचन मिलता है, जबकि सुश्रुत संहिता में शल्यचिकित्सा, शरीर रचना विज्ञान शल्य उपकरणों एवं शल्य प्रशिक्षण का उत्कृष्ट समागम ग्रंथ है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य दोनों संहिताओं में प्रतिपादित चिकित्सा विज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन करना और वर्तमान चिकित्सा विज्ञान में उनकी उपयोगिता का विश्लेषण करना है। इन दोनों ग्रन्थों के अध्ययन से हमें पता चलता है कि दोनों ग्रंथ परस्पर एक दूसरे के पूरक हैं एक के बिना दूसरा अधूरा है ये दोनों ग्रंथ संपूर्ण चिकित्सा की भारतीय अवधारणा को सुदृढ़ आधार प्रदान करते हैं।

मुख्य शब्द - चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, आयुर्वेद, चिकित्सा विज्ञान, कायचिकित्सा, शल्य चिकित्सा।

प्रस्तावना - भारतीय ज्ञान परंपरा में आयुर्वेद का विशिष्ट स्थान है जो ऋग्वेदस्य उपवेदः अस्ति। अर्थात् आयुर्वेद ऋग्वेद का उपवेद है। आयुर्वेद शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार है आयुर्वेद शब्द दो शब्दों के योग से बना है आयुः + वेद - आयुर्वेदः यहा आयु का अर्थ जीवन, आयु जीवित रहने की अवधि तथा दूसरा शब्द वेद - ज्ञान विज्ञान विद्या से है अर्थात् आयुर्वेद जीवन का ज्ञान या विज्ञान है।

परिभाषा - हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्।

मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते।., (चरक संहिता)

अर्थात् जिस शास्त्र में आयु के हित-अहित, सुख -दुःख तथा जीवन के स्वरूप और उसकी अवधि का ज्ञान दिया गया है उसे आयुर्वेद कहते हैं।

इसका मूल लक्ष्य केवल रोगों का उपचार करना नहीं, बल्कि स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा तथा रोगी के रोगों का निवारण करना है। चरक संहिता एवं सुश्रुत संहिता ने चिकित्सा विज्ञान को अनुभव परीक्षण और तर्क के आधार पर विकसित किया है चरक संहिता में आंतरिक चिकित्सा का वैज्ञानिक स्वरूप मिलता है जबकि सुश्रुत संहिता शल्य चिकित्सा एवं शरीर रचना विज्ञान की उत्कृष्ट परंपरा को प्रस्तुत करती है *।

शोध के उद्देश्य

महर्षि चरक द्वारा रचित चरक संहिता में वर्णित चिकित्सा विज्ञान का अध्ययन करना। (2) महर्षि सुश्रुत द्वारा रचित, सुश्रुत संहिता में वर्णित चिकित्सा विज्ञान का अध्ययन करना। (3) इन दोनों ग्रन्थों के चिकित्सा सिद्धांतों का तुलनात्मक विश्लेषण करना। (4) वर्तमानिक चिकित्सा विज्ञान में इन दोनों ग्रन्थों की उपयोगिता का मूल्यांकन करना।

शोध पद्धति- यह शोध गुणात्मक एवं वर्णनात्मक पद्धति पर आधारित है अध्ययन हेतु चरक संहिता , सुश्रुत संहिता तथा अन्य आयुर्वेद संबंधी *प्रामाणिक ग्रन्थों एवं शोध लिखों का उपयोग करना ।

चरकसंहिता का सामान्य परिचय -चरक संहिता आयुर्वेद का सबसे प्रसिद्ध, प्राचीन प्रामाणिक और महत्वपूर्ण ग्रंथ है ।इस ग्रंथ को आयुर्वेद की काय चिकित्सा (आंतरिक चिकित्सा)का आधार ग्रंथ माना जाता है। यह ग्रंथ मूलतः महर्षि “अग्निवेश” द्वारा रचित अग्निवेश तंत्र पर आधारित है । जिसका संशोधन और विस्तार महर्षि चरक द्वारा किया। बाद में इसके कुछ लुप्त अध्यायों की पूर्ति, दृढबल, ने की यह आयुर्वेद के बृहत्त्रयी (चरक संहिता, सुश्रुत संहिता , अष्टांग हृदय अष्टांग संग्रह) में प्रमुख स्थान है ।इसका मुख्य विषय है कायचिकित्सा है। इस ग्रंथ में रोगों के कारण, लक्षण निदान, उपचार औषधि, आहार -विहार तथा स्वास्थ्य संरक्षण का विस्तृत अध्ययन एवं वर्णन मिलता है ।यह ग्रंथ केवल रोगों के उपचार तक सीमित नहीं है, बल्कि स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा पर भी विशेष बल देता है चरक संहिता में आठ स्थान और लगभग 120 अध्याय है आठ स्थानों के नाम इस प्रकार है 1सूत्र स्थान 2 निदान स्थान 3विमान स्थान 4शरीर स्थान 5 इंद्रिय स्थान 6 चिकित्सा स्थान 7कल्पस्थान 8 सिद्धि स्थान यह त्रिदोष (वात, पित्त ,कफ) का विस्तृत विवेचन करते हुए रोग निवारण एवं स्वास्थ्य संरक्षण पर विशेष बल देता है ।इस ग्रंथ में चिकित्सा नीति, चिकित्सक के गुण रोगी के कर्तव्य तथा औषधि विज्ञान का व्यवस्थित वर्णन मिलता है।

सुश्रुत संहिता का सामान्य परिचय -

सुश्रुत संहिता भी आयुर्वेद का एक प्राचीन एवं अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है इसे शल्य चिकित्सा (SURGERY) का आधार ग्रंथ माना जाता है। इस ग्रंथ के रचयिता महर्षि सुश्रुत है, जिन्हें नाई (नापित)जाति से संबंधित मानते हैं। विश्व में सर्वप्रथम शल्य चिकित्सक (फादर ऑफ सर्जरी)भी कहा जाता है ।ये आयुर्वेद के महान आचार्य और भगवान धन्वंतरि के शिष्य के रूप में प्रसिद्ध है ।इस पद्धति का ज्ञान उन्हें भगवान धन्वंतरि से प्राप्त हुआ। यह ग्रंथ भी आयुर्वेद के बृहत् त्रयी से संबंधित है ।इस ग्रंथ का मुख्य विषय शल्य चिकित्सा (सर्जरी) तथा शालाक्य तंत्र (नेत्र नाक, कान एवं गले के रोगों से)है इसमें शल्य क्रियाओं, शल्यउपकरणों, अस्थिभंग (फैक्चर) घावों, प्लास्टिक सर्जरी तथा शरीर रचना का विस्तृत वर्णन मिलता है। इस ग्रंथ में लगभग 125 प्रकार के शल्य उपकरणों और 300 से अधिक शल्य प्रक्रियाओं का उल्लेख किया गया है । सुश्रुत संहिता को मुख्यतः 6 स्थान में विभाजित किया गया है। जो इस प्रकार है पहला सूत्र स्थान दूसरा निदान स्थान तीसरा शरीर स्थान चौथा चिकित्सा स्थान पांचवां कल्प स्थान और अंतिम उत्तर तंत्र में विभाजित किया है। इस ग्रंथ में मानव शरीर रचना एनाटॉमी का विस्तृत वर्णन मिलता है। शल्यचिकित्सा के सिद्धांत उपकरण प्रशिक्षण और उपचार पद्धति का वैज्ञानिक विवेचन प्राप्त होता है ।इस ग्रंथ में प्लास्टिक सर्जरी

मोतियाबिंद की शल्यक्रिया तथा अस्थि -चिकित्सा के प्रारंभिक सिद्धांतों का वर्णन हमें प्राप्त होता है। इसलिए इस ग्रंथ का आज भी आयुर्वेद और चिकित्सा इतिहास के अध्ययन में विशेष महत्वपूर्ण स्थान है

तुलनात्मक अध्ययन

आयुर्वेद की अवधारणा आचार्य - चरक ने आयुर्वेद को जीवन -विज्ञान के रूप में प्रस्तुत किया है । उनके अनुसार आयुर्वेद का उद्देश्य है।

स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणम् आतुरस्य विकार प्रशमनम्

अर्थात स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना तथा रोगी के रोगों का उपचार करना ।

चरक संहिता में आयुर्वेद की प्रमुख विशेषताएं -

स्वास्थ्य संरक्षण को सर्वोच्च महत्व त्रिदोष (वात, पित्त कफ)सिद्धांत, सप्तधातु एवं त्रिमल का विवेचन ,आहार ,विहार और सदाचार पर विशेष बल ,रोग के कारण ,निदान एवं चिकित्सा का वैज्ञानिक वर्णन, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य को भी चिकित्सा का अंग माना गया है।

सुश्रुत संहिता में आयुर्वेद की अवधारणा -

इन्होंने चिकित्सा के साथ-साथ शरीर रचना,शास्त्र क्रिया,अस्थि-विज्ञान तथा नेत्र रोगों का विस्तृत वर्णन किया है।

सुश्रुत संहिता की प्रमुख विशेषताएं -

शल्य चिकित्सा को विशेष शरीर रचना (ANATOMY) का विस्तृत अध्ययन शस्त्र एवं यंत्रों का वैज्ञानिक वर्गीकरण ,रोग निवारण के साथ-साथ शल्य उपचार का समन्वय और चिकित्सा में स्वच्छता एवं अनुशासन पर बल

स्वास्थ्य की परिभाषा चरक संहिता के अनुसार स्वास्थ्य की परिभाषा- ****स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणम् आतुरस्य विकार प्रशमनम्****, (चरक संहिता सूत्र स्थान 30/26)

अर्थ -अर्थात आयुर्वेद का प्रथम उद्देश्य स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना तथा दूसरा उद्देश्य रोगी के रोगों का निवारण करना है।

2 सुश्रुत संहिता में स्वास्थ्य की परिभाषा -

समदोषः समाग्निश्च समधातुमल क्रियः।

प्रसन्नात्मेन्द्रियमनः स्वस्थ इत्यभिधीयते॥

(सुश्रुत संहिता, सूत्र स्थान 15/48)

जिस व्यक्ति के दोष(वात, पित्त ,कफ) अग्नि धातुएं तथा मलों की क्रिया संतुलित हो तथा जिसकी आत्मा , इंद्रियां और मन प्रसन्न हो वही वास्तव में स्वस्थ कहलाता है ।

रोग निदान चरक संहिता - में रोग के कारण ,सम्प्राप्ति तथा आंतरिक चिकित्सा पर अधिक बल है। इसमें रोग परीक्षण -में निदान पंचक (निदान, पूर्वरूप रूप, उपशय , सम्प्राप्ति एवं रोगी परीक्षण में दशविध परीक्षा त्रिविध परीक्षा इसमें रोग के कारण एवं रोग उत्पत्ति का विश्लेषण करना साथ ही साथ रोग के कारणों की गहन विवेचन करना है।

सुश्रुत संहिता में रोग -निदान -इस संहिता में शल्य क्रिया के लिए आवश्यक निदान अंग रचना तथा प्रत्यक्ष परीक्षण पर अधिक बल दिया गया है। जैसे रोग परीक्षण में अष्टविध एवं प्रत्यक्ष निरीक्षण पर अधिक बल रोगी परीक्षण में अष्टविध परीक्षा शारीरिक परीक्षण आदि। सुश्रुत संहिता में रोग के स्वरूप, स्थान और शल्य- आवश्यकता का निर्धारण एवं रोग की प्रत्यक्ष पहचान और शल्य उपचार की तैयारी का वर्णन है। अतः हम निष्कर्षित कह सकते हैं कि महर्षि चरक का दृष्टिकोण चिकित्सीय (MEDICAL) है, जबकि महर्षि सुश्रुत का दृष्टिकोण शल्य- चिकित्सीय (SURGICAL) है इस प्रकार हमें इन दोनों ग्रन्थों में चिकित्सा पद्धति और शल्य चिकित्सा का ज्ञान प्राप्त होता है।

चरक संहिता एवं सुश्रुत संहिता के अनुसार चिकित्सा नीति एवं वैद्य के गुण-

यहां चिकित्सा नीति से तात्पर्य उन नैतिक सिद्धांतों से है जिनका पालन प्रत्येक वैद्य को रोगी के उपचार के समय करना चाहिए। जिससे इलाज अच्छा हो सके।

मुख्य सिद्धांत -

- * रोगी के हित को सर्वोपरि रखना।
- * सभी रोगियों चाहे वह गरीब हो या अमीर हो के साथ समान व्यवहार करना।
- * रोगी की गोपनीय जानकारी को सुरक्षित रखना।
- * लोभ, क्रोध और अहंकार से दूर रहकर उपचार करना।
- * शुद्ध आचरण एवं सदाचार का पालन करना।
- * रोग का सही निदान कर उचित औषधि देना।
- * आवश्यकता होने पर अन्य योग वैद्य से परामर्श लेना।
- * रोगी के प्रति करुणा, दया और सहानुभूति रखना।

वैद्य के गुण

चरक संहिता एवं सुश्रुत संहिता में आदर्श वैद्य के निम्नलिखित गुण बताए गए हैं। जैसे- शास्त्रों का गहन ज्ञान, व्यावहारिक अनुभव एवं दक्षता, रोग निदान में कुशलता, सदाचारी एवं विनम्र स्वभाव, धैर्यवान एवं संयमी, सत्यवादी और ईमानदार, रोगी के प्रति दयालु एवं सेवाभावी, स्वच्छता और अनुशासन का पालन करने वाला, निर्णय लेने में सक्षम एवं बुद्धिमान अंत में निरंतर अध्ययन एवं नवीन ज्ञान प्राप्त करने वाला हो

आधुनिक चिकित्सा में प्रासंगिकता -आयुर्वेद के प्रमुख ग्रंथ चरक संहिता और सुश्रुत संहिता आज भी आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में अनेक दृष्टियों से प्रासंगिक है। इन दोनों ग्रन्थों के सिद्धांत न केवल रोगों के उपचार बल्कि रोग निवारण और स्वास्थ्य संरक्षण में भी उपयोगी माने जाते हैं। जैसे -रोग निवारण पर बल देना, समग्र चिकित्सा दृष्टिकोण, रोग निदान की वैज्ञानिक पद्धति, शल्य चिकित्सा का आधार, चिकित्सा नैतिकता, औषधीय वनस्पतियों का महत्व, जीवन शैली संबंधी रोगों में उपयोगिता अतः हम कह सकते हैं कि यह सब आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान के साथ इन सिद्धांतों का समन्वय स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक प्रभावी और व्यापक बनता है।

निष्कर्ष -अतः हम कह सकते हैं कि चरक संहिता और सुश्रुत संहिता भारतीय आयुर्वेद की दो आधारभूत संहिताएं हैं, जिन्होंने चिकित्सा विज्ञान को व्यवस्थित और नैतिक आधार प्रदान किया दोनों ग्रंथों के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दोनों ग्रंथों की कार्य प्रणाली और विशेषज्ञता अलग-अलग है फिर भी उनका मूल उद्देश्य मानव स्वास्थ्य की रक्षा, रोगों का समुचित उपचार और दीर्घायु जीवन की स्थापना है। रोग निदान चिकित्सा नीति, वैद्य के गुण तथा रोगी - केंद्रित उपचार की अवधारणाएं आज भी चिकित्सा विज्ञान के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। आधुनिक चिकित्सा के संदर्भ में भी इन ग्रंथों का महत्व बना हुआ है। समग्र स्वास्थ्य (HOLISTIC HEALTH) निवारक चिकित्सा (PREVENTIVE MEDICINE) चिकित्सा नैतिकता (MEDICAL ETHICS) व्यक्तिगत उपचार (PERSONALIZED MEDICINE) तथा शल्य चिकित्सा के अनेक सिद्धांत आज भी प्रेरणादायक है अतः हम कह सकते हैं कि ये दोनों ग्रंथ वर्तमान और भविष्य की स्वास्थ्य व्यवस्था के लिए मूल्यवान ज्ञान स्रोत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- * चरक संहिता (आचार्य चरक)
- * सुश्रुत संहिता (आचार्य सुश्रुत)
- * अष्टांगहृदयम् (वागभट्ट)
- * आयुर्वेद का इतिहास (प्रिय व्रत शर्मा)
- * आयुर्वेद दर्शन (आधुनिक शोध ग्रंथ)